वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई - पत्रिका

वेदान्त पीयूष

वर्ष २४ जुलाई- २०२४ प्रकाशन - ०७

सम्पादिका :
स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

जुलाई २०२४

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

वेदान्त पीयूष

विषय सूचि

1,	श्लोक	05
2.	पू. गुरुजी का संदेश	06
3.	वाक्यवृत्ति	10
4.	गीता और मानवजीवन	15
5.	जीवन्मुक्त	20
6.	श्री जनक चरित्र	23
7.	कथा	26
8.	मिशन-आश्रम समाचार	30
9.	आगामी कार्यक्रम	48
10.	इण्टरनेट समाचार	51
11	लिन्क	52

जुलाई 2024

नित्यशुद्धविमुक्तैकम् अखण्डानन्दमद्वयम्।
सत्यं ज्ञानमनन्तं यत् परं ब्रह्माहमेव तत्॥

(श्लोक - ३६)

मैं वह ही परब्रह्म तत्त्व हूं, जो नित्य, शुद्ध, मुक्त एक, अखण्ड, आनन्द, अद्वय तथा सत्य, ज्ञान, अनन्त स्वरूप है।

सन्देश

स्थितप्रज्ञ
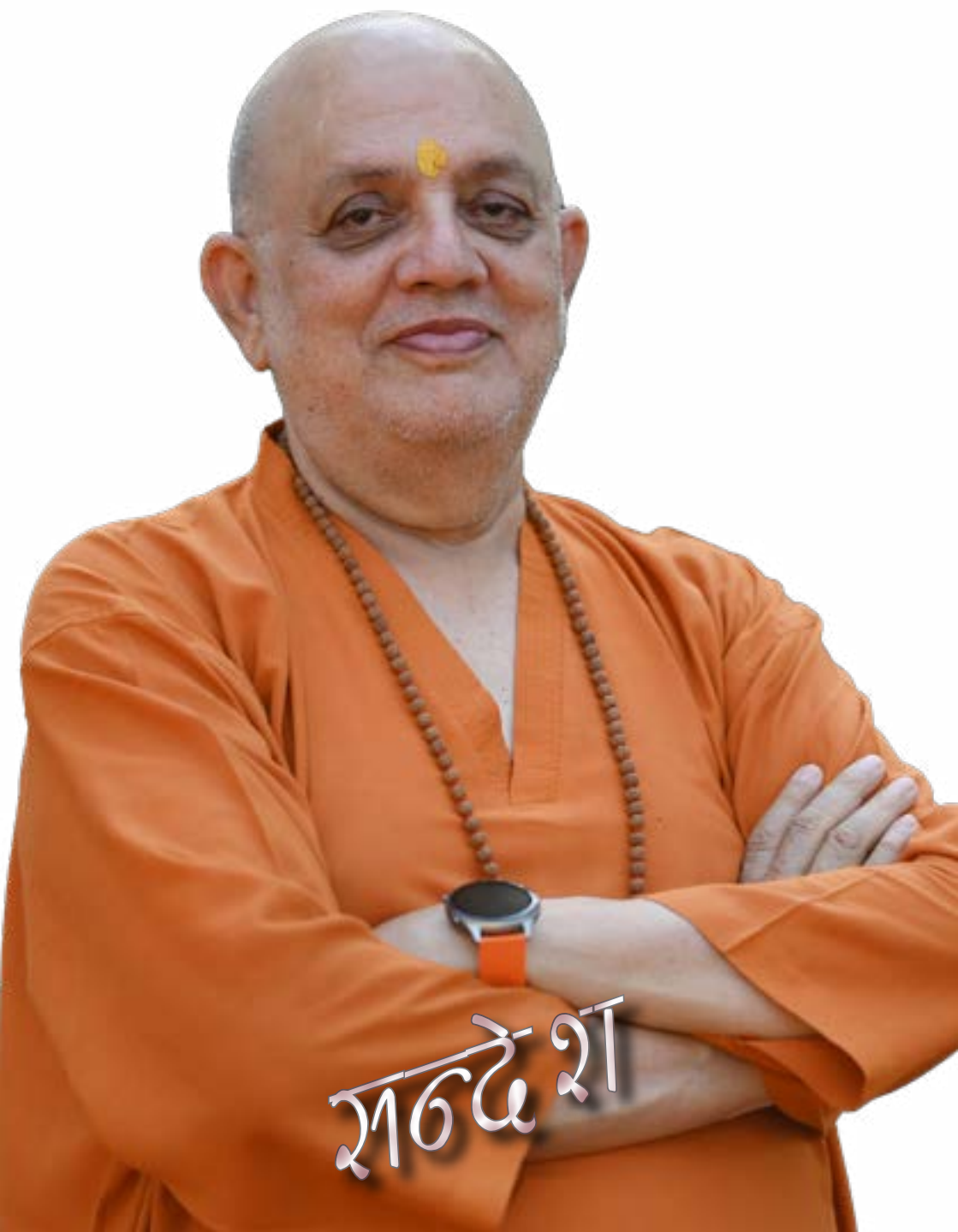
स्थितप्रज्ञ के लक्षण में भगवान प्रसिद्ध श्लोक 'या निशा सर्वभूतानां' के माध्यम से ज्ञानी और अज्ञानी का भेद बताते हैं। ज्ञानी और अज्ञानी की दृष्टि एक दूसरे से अत्यन्त विलक्षण है। जो अज्ञानी के लिए रात्री है, वहां ज्ञानवान मानों जगा हुआ है। तथा जिसमें अज्ञानी जगा है, उसे ज्ञानवान रात्रि देखता है।

वेदान्त ज्ञान से बाहर की दुनिया में कोई परिवर्तन नहीं होता है, न बाहर के किसी परिवर्तन की अपेक्षा होती है। यह दृष्टि मात्र का परिवर्तन है। ज्ञानी और अज्ञानी की दृष्टि के भेद को समझने के लिए ज्ञान का स्वरूप अर्थात् जीवनदर्शन समझना होगा। ज्ञानवान अपने अन्तर्गत के निश्चय ही जीवनदर्शन का सूचक है। ज्ञानी और अज्ञानी की जगत के बारे में, अपने बारे में क्या निश्चय है? ज्ञानवान की दृष्टि में जगत स्वप्नवत् मिथ्या

व असार है तथा स्वयं को जीवत्व की संकुचिता से मुक्त पूर्ण, अखण्ड, सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्म तत्त्व जानता है। इस प्रकार ज्ञानवान अद्वैत की अवस्था में जगा हुआ है। जहां जीव, जगत, ईश्वर आदि समस्त भेद से रहित स्वयं को एक अखण्ड सत्ता मात्र देख रहा है।

जब कि अज्ञानी की दृष्टि उनसे अत्यन्त विपरीत है। अज्ञानी द्वैत के अन्तर्गत जीता है। जहां हम भोक्ता और जगत भोज्य, हम कर्ता और ईश्वर कर्मफलदाता है। क्योंकि अज्ञानी स्वयं को संकुचित जीव मानता है। अपनी अपूर्णता सत्य है अतः उसकी निवृत्ति अनिवार्य है। जहां स्वयं को संकुचित जाना तो उसके साथ ही खण्ड के जगत में प्रवेश हो जाता है। जितना यह संकुचित जीव सत्य है, उतना ही सत्य यह दृश्य जगत है। अतः उसीसे अपनी अपूर्णता की निवृत्ति सम्भव है, इस प्रकार के निश्चय से युक्त होकर अब बहिर्मुखता से युक्त कर्ता-भोक्ता जीव होकर जीता है। सुखादि का स्रोत बाह्य विषय ही होने से उसमें आसक्त होकर सदैव पराधीन बना रहता है। और परिणाम स्वरूप अनवरत जन्म-मरण ाादिरूप संसार को ही प्राप्त करता है। ज्ञानी की दृष्टि में जगत स्वप्नवत् तथा स्वयं पूर्णस्वरूप होने से उसके लिए बाह्य जगत से उसे कुछ भी प्राप्त करने योग्य नहीं है।

अज्ञानी जिसे सुख का स्रोत मान रहा है, वह ज्ञानी के लिए अत्यन्त महत्वविहीन हो गया है। ज्ञानी अपनी जिस ब्रह्मस्वरूपता में जगा हुआ है, इस ज्ञान की अवस्था की अज्ञानी के लिए कल्पना तक नहीं है। भगवान शंकराचार्य इन दोनों के अत्यन्त विलक्षण दर्शन को काक-उलूक की संज्ञा देते हैं। जिस प्रकार उल्लू को सूर्य में अंघकार की कल्पना होने से कौऐ और उल्लू की दिन और रात्रि की परिभाषा अत्यन्त भिन्न होती है। उसी प्रकार ज्ञानी और अज्ञानी की स्वयं के बारे में तथा जगत के बारे में दृष्टि और समझ की अत्यन्त भिन्नता के कारण भगवान एक के लिए दिन वह दूसरे के लिए रात्रि तुल्य बताते हैं।

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्वं परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्याङ्घ्रि पद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

श्लोक – १२

सत्यानन्द स्वरूपं धी
साक्षिणं बोध विग्रहम्।
चिन्तयात्मतया नित्यं
त्यक्त्वा देहाधिगां धियम्॥

देहात्मबुद्धि को त्यागकर जो सत्य और आनन्दस्वरूप तथा बुद्धि का साक्षी और ज्ञानस्वरूप है – वह मैं हूं, इस प्रकार निरन्तर चिन्तन कर।

वाक्यवृत्ति

पूर्व श्लोक में आचार्य ने बताया कि अन्तःकरण और उसकी वृत्ति के तुम साक्षी हो। यह बात क्या तुम्हें नहीं दीख रही है? आज यह देखने में असमर्थता लग रही है, तो उसका कारण और उसका समाधान आचार्य यहां प्रदान करते हैं।

आज अज्ञानवशात् अपने आपको नहीं जानते है। इतना ही नहीं, अज्ञान उपरान्त अपने, जगतादि के बारे में विपरीत धारणा उत्पन्न करी है, जिसका परिणाम संसार है। हम स्वयं को नहीं जानने के कारण देहादिरूप अनात्मा को ही आत्मा मानकर जीते हैं। हम यह देश, काल, वस्तु से संकुचित, नश्वर, जन्मादि विकारों से युक्त देह है। इस संकुचिता की निवृत्ति बाह्य विषयादि के माध्यम से ही होगी। अतः बहिर्मुख होकर सतत विषयभोग के लिए प्रेरित रहते है। उससे प्राप्त विविध सुखादि अनुभव की वजह से उसके प्रति महत्वबुद्धि व भावना से युक्त है। हमारी इन्द्रियां तथा अन्तःकरण सतत बाहर के विषयों को महत्व प्रदान करके उसके बारे में प्रतिक्रिया करते रहते हैं। अतः आज हमें क्या दीख रहा है वा

अनुभव हो रहा है, उसका अत्यन्त महत्व बना हुआ है। अतः कौन देखनेवाला, अनुभव करनेवाला है, उसकी और ध्यान ही नहीं जाता है।

इस प्रकार हमारी उन-उन के प्रति महत्वबुद्धि ही हमें अन्तर्मुख कर, उसके साक्षी-दृष्टा की और अभिमुख नहीं होने देती। इन सब का कारण हमारी देहात्मबुद्धि है। देहात्मबुद्धि से अभिप्राय यह स्थूल शरीर के धर्मों को अपने धर्म समझना, तथा उसके पीछे विद्यमान प्राण, इन्द्रियां, अन्तःकरणयुक्त सूक्ष्म शरीर को ही अपनी वास्तविकता मानकर जीना। जब यही हम है तो उसकी पुष्टि करना न केवल हमारा धर्म और आवश्यकता है। किन्तु उसके सुख-दुःख सन्ताप आदि हमारे है, और वह भी सत्य है। अतः देहादि की पुष्टि हेतु व उसके उपरान्त बाह्य विषय, जो कि उसी धरातल के है, उसका महत्व स्वाभाविक ही स्थापित होने लगता है। अतः आचार्य बताते हैं कि पहले देहात्मबुद्धि का त्याग करो।

जब यह निश्चय करेंगे कि यह देह हम नहीं है, तब उससे सम्बद्ध बाह्य जगत का महत्व समाप्त होकर उसका अनुभव करनेवाला जो दृष्टा है, उसकी और अभिमुख होगे। यह दृष्टा अन्तःकरण की विविध वृत्तियों के आवागमन और परिवर्तन में भी असंग, अलिप्त सदैव स्थित रहता है। इतना ही नहीं, जीवन्त रहते हुए उन सब के होने व न होने को प्रकाशित करता है। यह बुद्धि के अन्तर्गत दृष्टा की तरह भान हो रहा है। उसका सतत अस्तित्व बना हुआ है, कभी भी अभाव नहीं होता है इसलिए यह सत्य स्वरूप है।

वेदान्त शास्त्र इसे ही सत्, चित् आनन्द स्वरूप बता रहे हैं। अतः सतत अपने आनन्दस्वरूप होने की श्रद्धा को दृढ़ करे। श्रद्धा का प्रभाव यह होता है कि हम अपने सुखादि हेतु बाहरी चीजों पर आश्रित नहीं होते है। देहात्मबुद्धि से रहित होकर जीने में सहायक होता है। हम वेदान्त के प्रति श्रद्धा से युक्त होकर सतत चिन्तन करते हुए अपनी समस्त देहात्मबुद्धि से मुक्त होकर उसका दृष्टा आत्मा अर्थात् 'मैं' की और ध्यान मोड़ें और शास्त्र प्रमाण का आश्रय लेकर उसकी गहराई में जाकर उसे अपरोक्षतः जाने यही पुरुषार्थ है।

गीता और मानवजीवन
पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी
—: १३ :—
कर्म – एक अमूल्य अवसर

गीता और मानवजीवन

गीता में भगवान अर्जुन को बताते हैं कि, 'कर्मणि एवाधिकारस्ते'। कर्म करना ही तुम्हारा अधिकार है, यह ही तुम्हारी योग्यता, तुम्हारा कर्तव्य है, यह ही तुम्हारा अधिकार है। क्योंकि तुम मनुष्य हो। किस प्रकार का कर्म? धर्म पर आश्रित कर्म। धर्म अर्थात् जीवन के मूलभूत मूल्य जिसे हम मनुष्यता कहते है। जो धर्म से अभिन्न है, धर्म से भिन्न नहीं है, धर्म के अनुरूप है वह धर्म्य, ऐसे धर्म के अनुरूप, धर्म्य कर्म करना यह मनुष्य का कर्तव्य है।

'कर्तव्य है' इसका आशय क्या है? इसका अर्थ यह कि तुम कर्म करो, उसमें किसी पर कृपा नहीं कर रहे है। जिस प्रकार हम इमानदार होते है, सत्य बालते है, किसीको हानि नहीं पहुचाते है, तो किसी पर कृपा नहीं करते है। यह तो कर्तव्य है, इसलिए करते है। 'कर्तव्य' शब्द बहुत सुन्दर है। जिसमें किसी पर कोई

उपकार हम कर रहे है, यह भावना नहीं है–उसे कहते है 'कर्तव्य'। तो फिर 'कर्तव्य' में किस प्रकार की भावना होगी? 'मेरे पर उपकार हो रहा है' इस प्रकार की भावना। हमें कर्म का अवसर प्रदान किया गया है, इसलिए हम उपकृत है। यह बहुत ही उत्कृष्ट भावना है, जिसे हम अपने जीवन में सरलता से उतार नहीं पाते है, किन्तु भगवान के आदेश के पीछे का हेतु यह है।

कर्मणि एव ते अधिकारः – जीवन के मूलभूत मूल्यों के अनुरूप कर्म करना वह तुम्हारा कर्तव्य है, तुम्हारी फर्ज है। क्योंकि तुम मनुष्य हो। यदि तुम मनुष्य नहीं होते, इतर प्राणी की तरह जन्मे होते तो स्वतः ही यह कर रहे होते। किन्तु मनुष्य होने के कारण तुम्हें स्वतंत्र बुद्धि मिली है। और इसलिए तुम्हें कहा जा रहा हहै कि अधर्म का त्याग होना चाहिए और धर्म का पालन होना चाहिए। जिस प्रकार ईशावास्य उपनिषद् बताता है कि मनुष्य को कर्म करते करते जीना चाहिए, निष्क्रिय होकर नहीं। जीने की इच्छा रखनी चाहिए, मरने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। और फिर सौ साल का आयुष्य अर्थात् पूरेपूरा आयुष्य जीना चाहिए।

गीता और मानवजीवन

आयुष्य का, समय का व्यय नहीं करना चाहिए। अर्थात् कर्म करते हुए ही जीना चाहिए और जीवन के लिए प्रेम होना चाहिए। जीवन कर्म के लिए है, भोग के लिए नहीं। जीवन का तिरस्कार नहीं होना चाहिए। कर्म का तिरस्कार नहीं होना चाहिए। भगवद् गीता में भी यही कहा है कि कर्म में ही तुम्हारा अधिकार है। इसका नाम है कर्मयोग। कितना सुन्दर उपदेश है!

जब दिन बुरे होते है तब हम जीवन का तिरस्कार करते है। 'हे प्रभु! कब यह जीवन पूरा होगा? भगवान हमें कब उठा लेंगे?' हम दिन की गिनती करते है। जब दिन अच्छे होते है तब कर्म को कैसे टाले, कैसे कम से कम काम करके ज्यादा से ज्यादा प्राप्त करे, यही हमारी प्रवृत्ति होती है, क्योंकि कर्म की किमत हम समझते नहीं है।

भगवान गीता में कर्म का महत्व समझाते हैं। कर्म तो जीवन का उत्कृष्ट ध्येय प्राप्त करने का साध ान है। इसलिए कर्म तो जीवन में प्राप्त हुआ अनमोल अवसर है। इस अवसर को यदि गवां देंगे तो फिर से यह मिलनेवाला नहीं है। इस जीवन में भगवान ने हमें हाथ-पैर दिए है, हमें अमुक परिस्थिति में रखा है, यह मेरे लिए एक श्रेष्ठ अवसर

है। उसके लिए मैं उपकृत हूं। इस प्रकार की मेरी दृष्टि होगी तो हम अपने कर्म द्वारा अपने उपरि अधिकारी पर या समाज पर उपकार करता हूं, ऐसी सोच कभी नहीं होगी, किन्तु यह सोच होगी कि ईश्वर ने सेवा करने का सौभाग्य प्रदान करके मुझे अनुगृहीत किया है।

कर्म के पीछे ऐसी उत्कृष्ट भावना होनी चाहिए। कर्म में से कुछ पाने की, फल प्राप्त करने की संकुचित दृष्टि रखे बगैर कर्म करना चाहिए। यह अपने लिए तुरन्त तो शक्य नहीं है, किन्तु इस उदात्त भावना को जीवन में उतारने का प्रयास प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिए।

– ४७ –

गंगोत्री
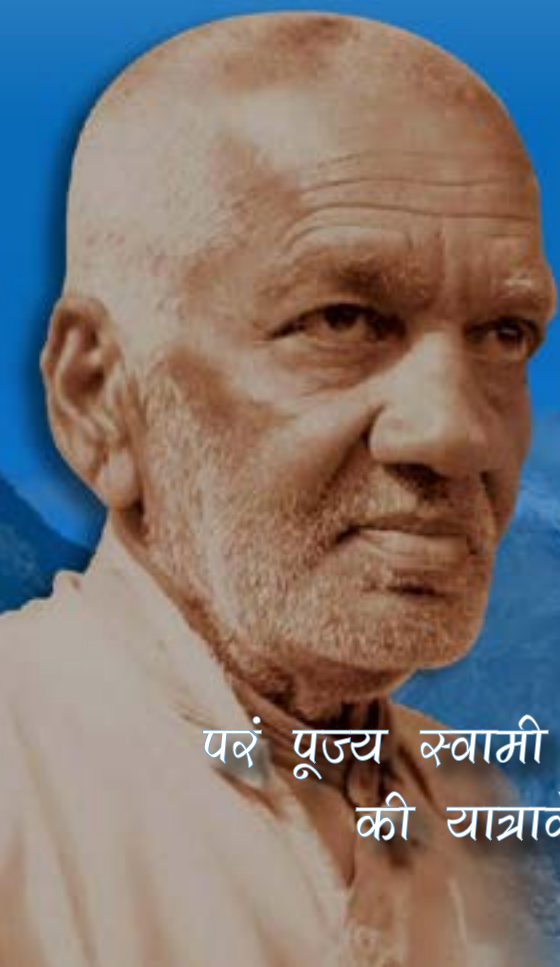
परं पूज्य स्वामी तपोवन महाराज
की यात्राके संस्मरण
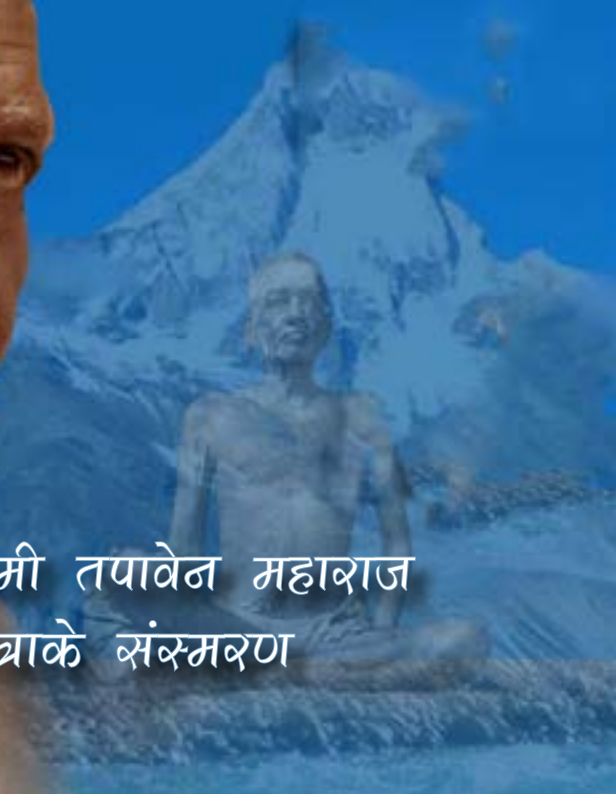
जीवन्मुक्त

महात्मा मतंग महर्षि की पदधूलि से पवित्र इस मनोहर भूमि के पास 'धराली' नामक एक दूसरा स्थान है। इन स्थानों में मैं कभी कभी कौतुहलवश जाकर रहा करता था। हिमधवलित उच्च पर्वतों की सुन्दरता तथा शांति सब प्राणियों को आकर्षित करती है। लीजिए, यहीं से थोडी दूरी पर, जहां महर्षि का सुन्दर, महनीय आश्रम स्थान है, सीधे तिब्बत की ओर अर्थात् पश्चिम तिब्बत में स्थित कैलास पर्वत की ओर, एक अच्छा खासा मार्ग निकलता है। इसी मार्ग पर अति उन्नत गिरि पार्श्वों से होकर दिव्य देवदारु तरुओं की छाया तले बहती हुई गंगा के दर्शन करते करते कुछ मील उपर की ओर चलें तो गंगोत्री नामक दिव्य धाम दीख पडता है। इसी मार्ग पर गंगा नदी का स्वर अति उच्च हो जाता है। क्योंकि यहां वह घने पर्वत खण्डों के बीच

में से होकर गुजरती है। दो उन्नत शिलोच्चय पंक्तियों के बीच उच्च स्वर के साथ बहती हुई गंगा नदी यहां ऐसे प्रतीत होती है, जैसे कोई बालिका अपने मातापिता के बीच किलकारियां मारती दौड रही हो।

यह गंगोत्री धाम बदरी केदारों के समान यद्यपि उतना बहुत विशाल स्थान नही है, फिर भी प्रकृति शोभा में तो हिमालय के दूसरे धामों के बराबर ही है। गंगोत्री की पौराणिक महिमा का क्या कहना! जब गंगा की इतनी महिमा मानी गयी है, तो गंगा के उत्पत्ति-स्थान 'गंगोत्री' की महिमा तो अवर्णनीय है। पुराणों तथा इतिहासों ने बडी बडी चमत्कृत आख्यायिकाओं एवं वर्णनों द्वारा भागीरथी की महान प्रशंसा की है। यद्यपि विचारशील पुरुष यह नहीं मान सकते कि पौराणिक उपाख्यान तथा विवरण कई जगह यथाभूत अर्थों का प्रतिपादन करने वाले हैं, तथापि इस तथ्य का कोई निषेध नहीं कर सकता कि उनमें यथार्थ तत्त्व अन्तनिर्हित है।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)
श्री जनक चरित्र
– ०४ –
प्रनवउं परिजन सहित विदेहू।
जाहि राम पद गूढ़ सनेहू।।

श्री जनक चरित्र

महाराज जनक के समक्ष महर्षि विश्वामित्र सीताजी के स्वयंवर के लिए सुसज्जित किए गए धनुषयज्ञ के मण्डप की सराहना करते हैं, इसे सुनकर वे अत्यन्त मुदित हो उठते हैं। किन्तु धनुष न टूट पाने पर वे जिस निराशा की मनःस्थिति में पहुंच जाते हैं वह किसी साधारण व्यक्ति से भिन्न न थी। वे राजाओं की पौरुषहीनता पर क्षुब्ध थे। उन्हें बार-बार यह पश्चात्ताप हो रहा था कि उन्होंने धनुर्भंग की प्रतिज्ञा करके इतनी बड़ी भूल क्यों की। उन्हें अपनी कन्या के कुमारी रह जाने की भावना विह्वल और व्याकुल बना देती है। उनके अन्तःकरण में एक अन्तर्द्वन्द्व भी दृष्टिगोचर होता है, जिससे व्याकुल होकर सोचते हैं कि क्या करें। एक ओर कन्या के विवाह की आकांक्षा अपने प्रबल रूप में विद्यमान थी ही किन्तु प्रतिज्ञा छोड़ देने पर अपने समस्त पुण्य विनष्ट हो जाने का भय भी उन्हें व्यथित बना रहा था। इसी निराशा की मनःस्थिति में वे राजाओं से अपने घर लौट जाने का अनुरोध करते हैं।

इस तरह एक असाधारण पात्र के सरलीकरण की प्रक्रिया सामने आ जाती है और बाद में तो वे लक्ष्मण के द्वारा की जाने वाली आलोचना से संकुचित भी दिखाई देते हैं और इसकी पराकाष्ठा तब हो जाती है जब वे परशुराम के समक्ष भय से कांप उठते हैं।

इन प्रसंगों को पढ़कर जनक की महानता का कोई चित्र मन में नहीं उभरता है। यह प्रश्न मन में उठना स्वाभाविक ही है कि महाराज श्री जनक जैसे तत्त्वज्ञ का ऐसा चरित्र उपस्थित करने में कवि का तात्पर्य क्या है? इसे गोस्वामीजी ने एक रूपक के माध्यम से स्पष्ट करने की चेष्टा की है।

उसमें उस इतिहास का स्मरण किया गया है कि मार्कण्डेय मुनि ने भगवान् नारायण के समक्ष प्रलय देखने की आकांक्षा प्रकट की थी और कैसे उन्होंने प्रलय का भयावह दृश्य देखा और प्रभु ने उनकी प्रार्थना सुनकर उनकी किस प्रकार रक्षा की थी; उस प्रसंग का उल्लेख किया गया है।

कथा / प्रसंग

त्रिपुरासुर का वध

त्रिपुरासुर का वध

भगवान शिव को त्रिपुरारि वा त्रिपुरासुर भी कहा जाता है, क्योंकि उन्होनें तारकासुर के तीन पुत्रों का वध किया था। उस विषयक कथा इस प्रकार है। तारकासुर के तीन पुत्र थे, तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली। जब भगवान शिव के पुत्र कार्तिकेय ने तारकासुर का वध किया तो उसके पुत्रों को बहुत दुःख हुआ। उसका प्रतिशोध लेने के लिए घोर तपस्या करके ब्रह्माजी को प्रसन्न किया और एक विचित्र वरदान को प्राप्त किया। जिसमें ब्रह्माजी से तीन नगरों का निर्माण करवाने को कहा, जो सतत अन्तरिक्ष में घूमते रहें।

हजारो साल में एक बार हमारी नगरी एक रेखा में आएं और उस समय क्षणार्ध के लिए हम तीनों एक रेखा में हो, उस समय यदि किसी भी देवता ने उसका एक बाण से वेधन कर दिया तो हमारी मृत्यु होगी, अन्यथा पुनः हजारों वर्ष तक हम अन्तरिक्ष में घूमते रहेंगे। ब्रह्माजी ने उनकी इच्छानुसार तीनों को यह वरदान

त्रिपुरासुर का वध

प्रदान किया। वरदान पाकर वे तीनों बहुत प्रसन्न हुएं। ब्रह्माजी के आदेशानुसार मयदानव ने ऐसी तीन नगरी का निर्माण कर दिया, जिसमें एक स्वर्ण की, एक रजत की और एक लोहे की थी। तीनों उन एक एक नगरी मे वास करने लगे।

अपनी आसुरी प्रवृत्ति के अनुसार तीनों लोकों पर अपने पराक्रम से अधिकार प्राप्त कर लिया। इन दैत्यों से भयभीत होकर समस्त देवता, ऋषिगण भगवान शंकर की शरण में गएं। उनके संताप के बारे में सुनकर भवान् शिव त्रिपुरासुर का वध करने को तैयार हो गएं, किन्तु उसके लिए एक विशेष रथ की मांग करी।

जिस रथ के पहिए सूर्य और चन्द्रमा हो, वरुण, यम, कुबेर आदि को रथ के घोडे बनना होगा। ब्रह्माजी रथ के सारथि बनें। सुमेरु पर्वत को धनुष बनना होगा। शेषनाग को उसकी प्रत्यंचा बनना होगा और उस पर भगवान विष्णु का बाण चड़ाया जाएगा, तब ही हम उसका भेदन करेंगे। भगवान के आदेशानुसार सब तैयार हो गए और ऐसे दिव्य रथ का निर्माण हो गया। उस दिव्य रथ पर सवार होकर भगवान शिव जब त्रिपुरों का वध करने चलें तो दैत्यों में हाहाकार मच गया। ठससे दैत्यों देवताओं में युद्ध छिड़ गया। जैसे ही त्रिपुर एक

सीधी रेखा में आए, भगवान शिव ने दिव्य बाण चलाकर उनका नाश कर दिया। त्रिपुरों का नाश होते ही सभी देवता महादेव की जय-जयकार करने लगें। त्रिपुरों का अन्त करने के कारण ही भगवान शिव त्रिपुरारि कहलाएं।

ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान को एक त्रिपुरासुर को मारने के लिए इतना बडे टीमजाम के साथ आश्रय लेना पड़ा। किन्तु सत्य यह है कि जिनके भ्रूकुटी के विलास मात्र से सृष्टि का प्रलय हो जाता है, उनके लिए त्रिपुरासुर तो अत्यन्त तुच्छ, तिनके के समान भी नहीं हैं। वस्तुतः भगवान किसी के वश में नहीं है, किन्तु सब भगवान के अधीन है, इसलिए तो उन सब को आदेश भी दिया जा सकता है। समस्त ब्रह्माण्ड भगवान के अधीन होकर अपना अपना कार्य करता है।

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम / मिशन समाचार

Lighting the Lamp at Gita Sammelan, Indore

आश्रम / मिशन समाचार

Enlightening pointers on 'Oordhwa Moolam'

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार
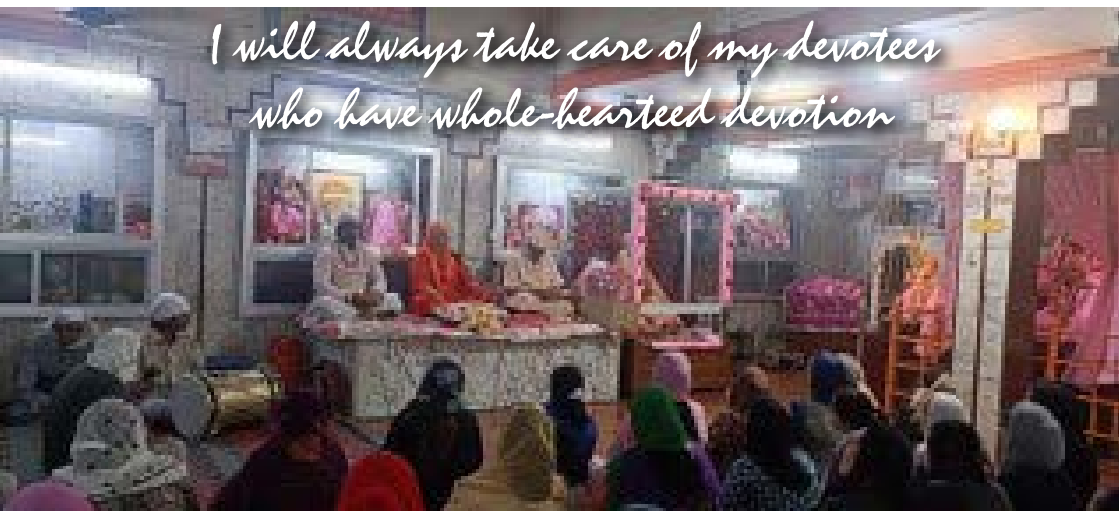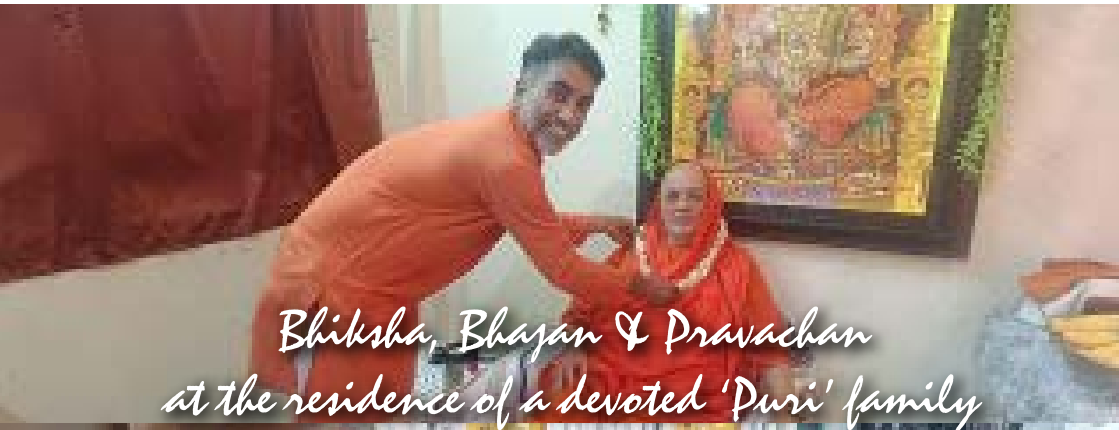
Bhiksha, Bhajan & Pravachan
at the residence of a devoted 'Puri' family

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Inspiring Talk on Totakashtakam

आश्रम / मिशन समाचार

Visit to Kawadia Parvat

Adventurous Climb

आश्रम / मिशन समाचार

In the midst of deep Forest

Has unique hexagonal stones from volcanic eruptions millions of years back

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Narmada Ghat at 'Dharaji Teertha'

We were there on 'Ganga Dusshera Day'
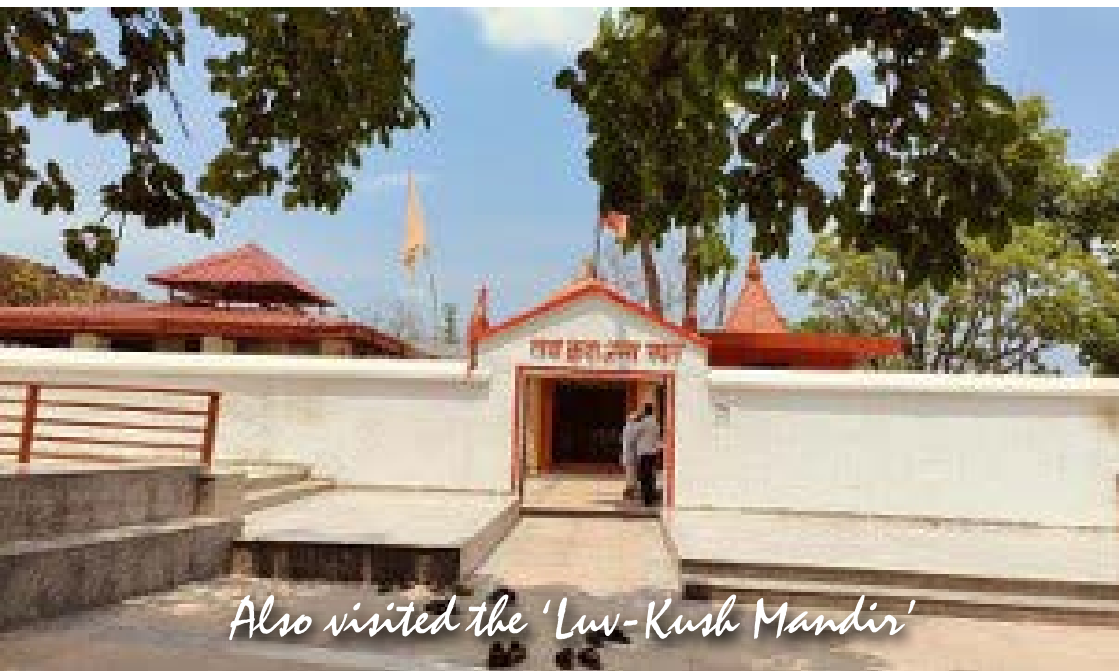
आश्रम / मिशन समाचार

Also visited the 'Luv-Kush Mandir'

Picnic Lunch in the fields on our way back

आश्रम / मिशन समाचार

श्रीमद् भगवद् गीता

(शांकर भाष्य समेत) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः 7.30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

आश्रम / मिशन समाचार

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी द्वारा

ओन लाईन ज्ञान यज्ञ (प्रायोजित)

श्री रामगीता (अध्यात्म रामायण)

दि. 8 सितम्बर से 17 अक्टूबर तक

(यु ट्यूब चेनल पर)

गुरु पूर्णिमा उत्सव

२१ जुलाई २०२४

कार्यक्रम की रूपरेखा

प्रात: १० बजे से

- आदि शंकराचार्य का पूजन / - गुरु परम्परा का पूजन

- पूज्य गुरुजी पादपूजा / - पूज्य गुरुजी द्वारा आशिर्वचन

- प्रसाद एवं भण्डारा

नमो नम:
श्री गुरुपादुकाभ्याम्

परं पूज्य गुरुजी
स्वामी आत्मानन्दजी सरस्वती
वेदान्त आश्रम, इन्दौर

आश्रम / मिशन समाचार

श्री कृष्ण जन्माष्टमी शिविर

२१ से २६ अगस्त २०२४

(25 अगस्त – जन्माष्टमी पर्व)

सात्विक आहार
सात्विक विहार
सात्विक विचार

Celebrate
Janmashtami Festival with
Knowledge & Lots of Fun
WITH
पूज्य स्वामी आत्मानन्द
Assisted by

छह दिवसीय आवासीय शिविर

विषय:

गीता अध्याय: ३

(कर्मयोग)

(The Art of Connectivity with God, in & thru every Action)

गीता प्रवचन,
ध्यान, श्लोकपाठ
पूजा-अभिषेक,
भजन, प्रश्नोत्तर

स्थान : वेदान्त आश्रम
सुदामा नगर, इन्दौर

website : www.vmission.org.in
vmission@gmail.com

Internet News

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

(Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS

SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA

SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING

MORAL STORIES ETC

Audio Pravachans (Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Sandesh - July '24

Vedanta Piyush - June'24